बी॰ ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
पेपर-7
'ऐतिहासिक भाषाविज्ञान'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग डी॰ के॰ कॉलेज
डुमरॉव

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान —

वर्णनात्मक भाषाविज्ञान में किसी भाषा के काल-विशेष के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रतिकूल ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान में एक ही भाषा के विभिन्न कालों के स्वरूप का अध्ययन होता है। किसी भाषा के पुराने रूपों से नये रूपों का विकास किस प्रकार हुआ, यह दिखाना इस प्रणाली का कार्य है। इसलिए द सोसूर ने ऐतिहासिक प्रणाली को गत्यात्मक या विकासात्मक प्रणाली कहा है। उदाहरणार्थ, वैदिक युग से लेकर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हुए आधुनिक भाषाओं का ध्वनि, पद या अर्थ की दृष्टि से कैसे विकास हुआ है, यह दिखाना इस प्रणाली के अन्तर्गत आयेगा।

उस विकास के क्या कारण थे, उन कारणों के क्या परिणाम हुए? इत्यादि बातें भी इस प्रणाली की सीमा में आती हैं। भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन में वर्णनात्मक अध्ययन अनायास आ जाता है, क्योंकि विकास दिखाते समय भी काल-विशेष की स्थिति को दिखाना आवश्यक होता है। भाषा सिद्धान्त: प्रतिपल परिवर्तित होती रहती है, किन्तु वह परिवर्तन इतना सूक्ष्म होता है कि उसे

ग्रहण करना असम्भव है। वह जब कालान्तर में पुंजीभूत हो जाता है तभी अनुभव का विषय बनता है। इसलिए विकास के भी अनेक सोपान हैं और उन सोपानों की चर्चा ही ऐतिहासिक विकास के अन्तर्गत आती है।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान -

तुलनात्मक प्रणाली में वर्णनात्मक या ऐतिहासिक प्रणालियों का अन्तर्भाव हो जाता है। जहाँ वर्णनात्मक या ऐतिहासिक अध्ययन में किसी एक भाषा को आधार बनाया जाता है, वहाँ तुलनात्मक अध्ययन में अनेक भाषाओं को अध्ययन का आधार बनाना पड़ता है। बिना अनेक के तुलना हो ही नहीं सकती। तुलना के लिए दो या दो से अधिक भाषाओं के काल-विशेष के स्वरूपों को लिया जाता है, स्वभावतः उसमें वर्णनात्मक अंश आ जाता है। यदि काल-विशेष तक सीमित न रहकर भिन्न-कालों के स्वरूपों को अध्ययन का विषय बनाया गया और उनकी परस्पर तुलना की गयी तो वह ऐतिहासिक प्रणाली हो गयी। इसलिए वर्णनात्मक और ऐतिहासिक प्रणालियों के समन्वय में तुलनात्मक प्रणाली सम्भव हो पाती है।

वस्तुतः भाषाविज्ञान का जन्म ही तुलनात्मक प्रणाली से हुआ। अठारहवीं शताब्दी

में संस्कृत ग्रीक और लातिन की तुलना के द्वारा यह बात सिद्ध हुई कि ये तीनों भाषाएँ एक परिवार की हैं और इनका साम्य उसी का परिणाम है। इसीलिए काफी समय तक भाषा-विज्ञान को सदा तुलनात्मक भाषाविज्ञान (कम्पेरेटिव फ़िलॉलोजी) ही कहा जाता था। अब तुलनात्मक शब्द हटा दिया गया है, क्योंकि बिना तुलना के भी भाषाविज्ञान की स्थिति सम्भव है। जैसा और कहा गया है, वर्णनात्मक या ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में तुलना की आवश्यकता नहीं होती। यों तुलना भाषा के किसी तत्व-ध्वनि पद वाक्य, अर्थ -को लेकर हो सकती है।

भाषा का अध्ययन किसी दूसरे लक्ष्य के लिये नहीं स्वयं भाषा की विशेषताओं के उद्घाटन और विवेचन के लिए किया जाता है। इसके विपरीत फ़िलॉलोजी साहित्यिक, सांस्कृतिक या सामाजिक महत्व के विभिन्न लेखनों से सम्बद्ध है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)